www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 11, 19-22

Article ID: 229

पंचगव्य का पशुपालन में महत्व

अंजली आर्या[1], प्राची शर्मा[2], निति शर्मा[1], और एस. वी. शाह[1]

[1]पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग और [2]पशु चिकित्सा मादा रोग और प्रसूति विभाग
पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, कामधेनु विश्वविद्यालय, आणंद

पंचगव्य गाय से प्राप्त दूध, मूत्र, गोबर, घी और दही का प्रतिनिधित्व करता है और आयुर्वेद और पारंपरिक भारतीय नैदानिक प्रथाओं में अपूरणीय औषधीय महत्व रखता है। आयुर्वेद में, पंचगव्य उपचार को 'काउपैथी' कहा जाता है। आयुर्वेद कई प्रणालियों के रोगों के इलाज के लिए पंचगव्य की सिफारिश करता है, जिसमें गंभीर स्थितियां भी शामिल हैं, लगभग बिना किसी दुष्प्रभाव के। यह एक स्वस्थ जनसंख्या, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत, पूर्ण पोषण संबंधी आवश्यकताओं, गरीबी उन्मूलन, प्रदूषण मुक्त वातावरण, जैविक खेती आदि के निर्माण में मदद कर सकता है। इन तत्वों में कई बीमारियों को ठीक करने की शक्ति है। सभी मिश्रित या कभी-कभी अकेले ही प्राकृतिक रूप से उपलब्ध सर्वोत्तम औषधि हैं। यह प्रतिरोधी शक्ति को बढ़ाता है, कोशिकाओं को फिर से जीवंत करता है, कैंसर को नियंत्रित कर सकता है और एंटीबायोटिक दवाओं की खुराक को कम कर सकता है। इसलिए जरूरी है कि दुनिया भर के लोगों में पंचगव्य के बारे में जागरूकता पैदा की जाए। वर्तमान समीक्षा का उद्देश्य पंचगव्य के स्वास्थ्य और औषधीय लाभों को संक्षेप में प्रस्तुत करना है।

भारत परंपराओं की भूमि है जिसकी जड़ें प्राचीन विज्ञान से जुड़ी हैं जो सीधे सामाजिक अनुष्ठानों और उनके पीछे के वैज्ञानिक कारणों को जोड़ती हैं। भारत में, गाय को माँ के समान पालन पोषण करने के स्वभाव के कारण 'गौमाता' या 'कामधेनु' कहा जाता है। कामधेनु उस पवित्र गाय का नाम है जो वांछित चीजों को पूरा करने के लिए विश्वास करती थी। पंचगव्य स्वास्थ्य लाभ और औषधीय गुणों का खजाना है। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति ने गाय के दूध, घी, मूत्र, गोबर और दही के उपयोग के महत्व का वर्णन किया है, जिनमें से प्रत्येक को विभिन्न रोगों के उपचार के लिए 'गव्य' (यानी 'गौ' से प्राप्त गाय) कहा जाता है। प्रत्येक उत्पाद में मानव स्वास्थ्य, कृषि और अन्य उद्देश्यों के लिए विभिन्न घटक और उपयोग होते हैं। 'पंचगव्य' दो शब्दों से बना है, 'पंच' का अर्थ है पाँच और 'गव्य' का अर्थ 'गौ' से है, जो कुल मिलाकर एक गाय से प्राप्त पाँच उत्पादों का प्रतिनिधित्व करता है। प्रत्येक 'गव्य' विभिन्न रोगों के खिलाफ एक अलग औषधीय प्रभाव डालता है। अन्य पैथियों की तरह ही पंचगव्य चिकित्सा या उपचार को 'काउपैथी' कहा जाता है। प्रत्येक 'गव्य' का उपयोग एकल चिकित्सा के रूप में या अन्य उत्पादों के संयोजन में या अन्य उपचारों के साथ किया जा सकता है। साथ ही, सभी पांच उत्पादों का अकेले या संयुक्त या किसी अन्य सिंथेटिक, हर्बल, या खनिज मूल का उपयोग किया जा सकता है ।

पंचगव्य की तैयारी

पंचगव्य, एक जैविक उत्पाद विकास को बढ़ावा देने और पादप प्रणाली में प्रतिरक्षा प्रदान करने की भूमिका निभाने की क्षमता रखता है। पंचगव्य में नौ उत्पाद शामिल हैं। गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, गुड़, घी, केला, कोमल नारियल और पानी। जब इन सभी उत्पादों को उपयुक्त रूप से मिश्रित और उपयोग किया जाता

है, तो ये चमत्कारी प्रभाव डालते हैं।

- गाय का गोबर - 7 किलो
- गाय का घी - 1 किलो

उपरोक्त दोनों सामग्रियों को सुबह और शाम दोनों समय अच्छी तरह मिला लें और 3 दिन के लिए रख दें

- गाय का मूत्र - 10 लीटर
- पानी - 10 लीटर

3 दिन बाद गोमूत्र और पानी मिलाकर 15 दिन तक नियमित रूप से सुबह और शाम दोनों समय मिला कर रख दें। 15 दिनों के बाद निम्नलिखित को मिलाएं और 30 दिनों के बाद पंचगव्य तैयार हो जाएगा।

- गाय का दूध - 3 लीटर
- गाय का दही - 2 लीटर
- कोमल नारियल पानी - 3 लीटर
- गुड़ - 3 किलो
- अच्छी तरह से पका हुआ केला - 12

उपरोक्त सभी वस्तुओं को उपरोक्त क्रम के अनुसार चौड़े मुंह वाले मिट्टी के बर्तन, कंक्रीट टैंक या प्लास्टिक के डिब्बे में जोड़ा जा सकता है। कंटेनर को छाया में खुला रखना चाहिए। सामग्री को दिन में दो बार सुबह और शाम दोनों समय हिलाना है। पंचगव्य स्टॉक समाधान 30 दिनों के बाद तैयार हो जाएगा। (इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि भैंस के उत्पादों का मिश्रण न हो। गाय की स्थानीय नस्लों के उत्पादों में विदेशी नस्लों की तुलना में शक्ति होती है)। इसे छाया में रखा जाना चाहिए और घरेलू मक्खियों को अंडे देने और घोल में कीड़ों के गठन को रोकने के लिए तार की जाली या प्लास्टिक मच्छरदानी से ढक देना चाहिए। यदि गन्ने का रस उपलब्ध न हो तो 500 ग्राम गुड़ को 3 लीटर पानी में घोलकर डालें।

पशु स्वास्थ्य के लिए पंचगव्य

पंचगव्य कई सूक्ष्म जीवों, बैक्टीरिया, कवक, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, अमीनो एसिड, विटामिन, एंजाइम, ज्ञात और अज्ञात वृद्धि को बढ़ावा देने वाले कारक है तथा सूक्ष्म पोषक तत्व, एंटीऑक्सिडेंट और प्रतिरक्षा बढ़ाने वाले कारकों की तरह कार्य करता हैं।

जब जानवरों और मनुष्यों द्वारा मुँह से ग्रहण किया जाता है, तो पंचगव्य में जीवित सूक्ष्म जीव प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करते हैं और अंतर्ग्रहीत सूक्ष्मजीवों के खिलाफ बहुत सारे एंटीबॉडी का उत्पादन करते हैं। यह वैक्सीन की तरह काम करता है। शरीर की यह प्रतिक्रिया जानवरों और मनुष्यों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है और इस प्रकार बीमारी को रोकने और बीमारी को ठीक करने में मदद करती है। यह उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा कर देता है और युवापन को बहाल करता है। पंचगव्य में मौजूद अन्य कारक शरीर में भूख, पाचन और आत्मसात और विषाक्त पदार्थों को खत्म करने में मदद करते हैं। कब्ज पूरी तरह ठीक हो जाती है। इस प्रकार पशु और मनुष्य के स्वास्थ पर सकारात्मक प्रभाव डालती है तथा यह बालो और त्वचा के लिए भी लाभकारी हैं। यह वजन बढ़ाने में भी प्रभावशाली कार्य करता है।

सूअर

उम्र और वजन के आधार पर पंचगव्य को पीने के पानी में 10 मिली - 50 मिली / सुअर की दर से मिलाया जाता हैं। सूअर को स्वस्थ और रोगमुक्त रखने में मदद करता है। यह वजन रूपांतरण अनुपात में जबरदस्त वृद्धि करता है। इससे सूअर के मालिकों को फ़ीड की लागत कम करने और बढ़े हुए वजन के कारण बहुत अच्छा रिटर्न प्राप्त करने में मदद मिलती है।

बकरी और भेड़

उम्र के आधार पर प्रति पशु प्रति दिन 10 मिली से 20 मिली पंचगव्य देने के बाद बकरियां और भेड़ स्वस्थ हो गए और कम समय में अधिक वजन प्राप्त कर लिया।

गाय

पंचगव्य को पशु आहार और पानी के साथ प्रति गाय प्रति दिन 100 मिलीलीटर की दर से मिलाकर देने से, गायों में दूध की उपज, वसा की और एसएनएफ मात्रा में वृद्धि के साथ स्वस्थ में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। गर्भाधान की दर में भी वृद्धि देखने

को मिलती हैं। गर्भ में बाकी रह गई अपरा (रिटेन्ड प्लेसेंटा), *मैस्टाइटिस* और खुरपका मुँहपका बीमारी अतीत की बात बन रही हैं। अब गाय की त्वचा अधिक बालों से चमकदार होती है और अधिक सुंदर दिखती है।

धान की पुआल (घास) पर यूरिया का छिड़काव करने के बजाय, कुछ किसानों ने स्टेकिंग के दौरान परत दर परत पंचगव्य के 3 प्रतिशत घोल का छिड़काव किया और इसे किण्वित होने दिया। गायों ने बिना छिड़काव वाले घास के स्टॉक की तुलना में ऐसी घास को प्राथमिकता दी।

मुर्गी पालन

प्रति मुर्गी प्रति दिन 1 मिली की दर से चारा या पीने के पानी में मिलाने पर पक्षी रोगमुक्त और स्वस्थ हो जाते है। मुर्गियां लंबे समय तक बड़े आकार के अंडे देती है। ब्रायलर मुर्गियों के वजन में भी प्रभावशाली वृद्धि देखी जा सकती है और फ़ीड-टू-वेट रूपांतरण अनुपात में सुधार होता है।

पंचगव्य का महत्व

संस्कृत में, पंचगव्य का अर्थ है गाय से प्राप्त पांच उत्पादों का मिश्रण। पंचगव्य गाय के पांच उत्पादों - गोबर, मूत्र, दूध, घी और दही से बनता है।

गोदुग्ध (गाय का दूध):

- गाय के दूध को सबसे अच्छा दूध बताया गया है।
- आयुर्वेदिक शास्त्रों के अनुसार गाय का दूध विभिन्न रोगों के उपचार में उपयोगी होने के साथ-साथ व्यक्ति की जीवन शक्ति और प्रतिरक्षा शक्ति को बढ़ाता है।
- रासायनिक संरचना के अनुसार इसमें वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज, कैल्शियम, आयरन और विटामिन बी मौजूद होता है।
- गाय के दूध में सेरेब्रोसाइड्स होते हैं जिनमें मस्तिष्क कोशिका को सुधारने और पुन: उत्पन्न करने की अच्छी क्षमता होती है।

गोघृत (गाय का घी):

- यह सभी प्रकार के घी में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।
- आयुर्वेदिक क्लासिक्स के अनुसार यह विभिन्न प्रकार के प्रणालीगत, शारीरिक और मानसिक विकारों में उपयोगी है और साथ ही यह लंबे समय तक उम्र को बनाए रखता है और आनुवंशिक स्थिति में देरी करता है और शरीर की जैव रसायन को अपने इष्टतम स्तर पर बनाए रखता है।
- गोघृत पर्यावरण को भी सुधारता है। जब यज्ञ में इसका प्रयोग किया जाता है तब यह आसपास के क्षेत्रों में ऑक्सीजन और ओजोन गैसों के स्तर में सुधार करता है।

गोमूत्र (गाय का मूत्र):

- औषधीय प्रयोजनों के लिए कुल 8 प्रकार के मूत्रों की व्याख्या की गई है, उनमें गोमूत्र सर्वोत्तम है।
- इसमें एंटी-कैंसर, एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-फंगल गुण पाए जाते हैं।
- इसमें एंटी-ऑक्सीडेंट और इम्यूनो मॉड्यूलेटर गुण भी होते हैं जो ऑटो इम्यून डिजीज के लिए बहुत उपयोगी होते हैं।
- क्लासिक्स में ऐसे कई संदर्भ उपलब्ध हैं जहां गोमूत्र को पसंद की दवा के रूप में वर्णित किया गया है। आंतरिक रूप से भी और बाह्य रूप से भी।

गोमय (गाय का गोबर):

- गोमय को गौमूत्र के समान ही पवित्र सामग्री माना जाता है और इसका उपयोग पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए किया जाता है।
- गाय के गोबर में रेडियम होता है और यह विकिरण के प्रभाव को नियंत्रित करता है।
- गाय के गोबर के विभिन्न आंतरिक और बाह्य ध्यानात्मक उपयोग क्लासिक में देखे जाते हैं।

गाय का दही:

- दही गाय के दूध का उपोत्पाद है। चरक और सुश्रुत सहित आयुर्वेद के सभी प्रमुख चिकित्सकों ने इसके गुणों और उपयोगिता पर लिखा है।
- इसे दुनिया भर में सबसे पौष्टिक खाद्य पदार्थों में से

एक माना जाता है। कई रोगों में दही का चिकित्सीय महत्व है।

- इसे एक टॉनिक के रूप में वर्णित किया गया है और इसे उन गुणों का श्रेय दिया जाता है जो समय से पहले बूढ़ा होने से रोकते हैं।
- दही दस्त और पेचिश के रोगियों को भी राहत देता है और पुरानी विशिष्ट और गैर-विशिष्ट में सिफारिश की जाती है।

पंचगव्य की क्रियात्मक गतिविधियाँ

भारत और विदेश के विभिन्न स्थानों पर कई संस्थानों द्वारा पंचगव्य के कई व्यावहारिक परीक्षणों ने पंचगव्य में वैज्ञानिक रूप से निम्नलिखित गतिविधियों को दिखाया है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं

- ग्रोथ प्रमोटर
- हेपेटोप्रोटेक्टिव
- इम्यूनोस्टिमुलेंट
- सूक्ष्मजीव - रोधी गतिविधि
- प्रोबायोटिक
- एंटीऑक्सिडेंट

पंचगव्य के उपयोग

गाय से प्राप्त पंचगव्य या पांच आवश्यक उत्पाद स्वास्थ्य और कल्याण के प्राकृतिक गुणों के कारण कई उपयोगों में आते हैं। इनका प्रयोग निम्न प्रकार से किया जाता है-

- विभिन्न औषधियों के उत्पादन में खाद, कीटनाशक, धूप, टूथ पाउडर, नहाने का साबुन आदि।
- मंदिरों में प्रसादम के रूप में।
- शरीर से धीमे जहर को निकालता है।
- शराब के दुष्प्रभावों से भी निजात दिलाता है।
- पंचगव्य के उपयोग से फलों और सब्जियों की शेल्फ लाइफ बढ़ जाती है।
- उपज की गुणवत्ता में भी काफी सुधार आता है।
- कृषि में पंचगव्य रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने में मदद करता है।
- पौधों के लिए पंचगव्य जैविक खेती के लिए एकदम सही है।
- आप इसे गाय, भैंस, सूअर, मछली, मुर्गी आदि जैसे पशु पशुओं के चारे के रूप में भी उपयोग कर सकते हैं।
- चूंकि इसमें कई एंटीबॉडी होते हैं, इसलिए आप इसे जानवरों और इंसानों में कई बीमारियों के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

निष्कर्ष

पंचगव्य ने मानव जाति के साथ-साथ पशुधन की सेवा करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है और यह विभिन्न मानव और जानवरों की बीमारियों के खिलाफ एक आशाजनक चिकित्सा है। पंचगव्य का प्रभाव केवल प्राचीन साहित्य तक सीमित नहीं होना चाहिए, हालांकि जैविक गतिविधियों और सुरक्षा को मान्य करने और मानकों को स्थापित करने के लिए वैज्ञानिक प्रयासों की आवश्यकता है।